



78

[illegible]

ध्यान ॥ वक्रादियश्च कयूगष्टतिदिग्यतीर्णा मूत्रमूत्रैरवनिवायुलयाजलैश्च ॥ मया
 दत्तं जगज्जगद्भुदविद्रुमारु यथास्ति गार्गवती यत्रमादशास्था ॥ सिंह रुकात
 कयिअद्भुत नरुताद्भुता गणेशजी मकरमानवयाकवक्रा ॥ गृहीतुं शक्यं यत्र नृप
 मकरयागयात्री खट्वाज्ञवालकजिर्वाकिनयालियदा ॥ यश्च कालीयुता ॥ त्रिधनया
 उत्तरा मरुंधीयादूकयूठयागिनययामि ॥ सुति ॥ उत्तरा मरुंधीयादूकयूठयागिनययामि
 दूकयूठयागिनययामि ॥ किंति ॥ उत्तरा मरुंधीयादूकयूठयागिनययामि ॥ सुति ॥
 नययामि ॥ मरुंधीयादूकयूठयागिनययामि ॥ सुति ॥ उत्तरा मरुंधीयादूकयूठयागिनययामि ॥

[illegible]

१ अवाहन ॥ द्रौयासायनायनादवी, खदवी खस्ववूचिणी । सूत्रलाकागतादवी अ
याकुर्व्वरुमलुत्त ॥ ॥ कृप्रवट्क, गण, यागिनी वलि ॥ ध्यान ॥ रुगवनिद्वे
व्वरुगक २ व्वरुनिष्ठ २ स्वाहा ॥ प्रिया अलि ॥ त्रिं द्रौं श्रीं कूं क्लीं ४ दंडं द्रीं नां कप्रद
कूं डप्रव ७ त्रियमदि निदूंकुं सुदावक २ त्वं मशूंस ४ मृत्यु रुवनम ४ स्वा
हा ॥ मूलं कृतिस् ॥ द्रौमहिषमदि न्ये स्वाहानन ४ ॥ दधस् ॥ द्रौनमा रुगवनि
यागेन्यविमहा वलं वनाक्रमं अण्वयाय दृणमनि अयूना नाय्यवदिनि

सौराग्यकाविलि सर्वार्थदायिनि सर्वदुःखकुदिनि रुगवनिवन्दन नमः ॥
॥ वास ॥
हा ॥ आवाहनादियानिमूढाकिन ॥ ॥ जय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

१ विन्दु प्रिकाल, यच्छकाल, नवकाल, अष्टकाल, अष्टदल, द्वाकणदल, बाणदल, कवच
प्राकान ७४ गुलाष्टक, अष्टमणन, वक्रलिखितद्वी, सनदिति ॥
ॐ कूं हूं ॐ कूं कूं नमः ॥ ॐ कूं सिद्धि कर्ताली कूं कूं कूं कूं नमः ॥ ॥

१ ॐ नमः ॥ ग्रीगुनव ॥ ग्रीयवदवगायेनमः ॥ गुथादा मुनं धवलित्रससहस्रदलकमलसग्री
गुननाथनवन अरुयप्रसनरुस्यविष्णुकलानय ॥ अखगुमगुलाकार, शार्फयनवगावर्
तत्यदं दधिर्मथन, तस्मै ग्रीगुनवनमः ॥ गुननमस्तु ॥ मूलाध्वजसनकलवसूर्यरात्रय
रुदयसवियतादसूर्यथरात्रय, कयालसनायववर्षसहस्रदलययरात्रय ॥ धनारु
काजययायथमसकास्तुयाय ॥ धनदा मुनयाय ॥ ॥ स्नानविधि ॥ जलसमूलमकुण
जियालजययायजलसं ३ गुलिलं खनं सायालहाय, धर्मसायालहाय, सायालनासि
य ॥ सुशोचयाय ॥ विज्ञां कूं स ७ ग्री मूर्याय प्रभाय १ स्वाहा ॥ सायाल ॥ गुननयनदवतातय

[illegible]

नमो भगवते वासुदेवाय ॥ स्वाहा श्रीसुभाय रुद्र ॥ धनं न्यास ॥ धनादिकालं वाक्यं कवायावर्णितं
श्रुत्वा यथावत्प्रथमं ॥ गिरि स कर्तनं ॥ वीं श्रुतिमं तुलायनमं शं सुभ्यं मं तुलायनमं शं ध
नालं रित्वा न कर्तनं ॥ वीं व नूनायनमं शं कुं डीं दूं कुं डीं सौ सामं मं तुलायनमं शं मत्स्यं मूद्रा
नना कयूयावमूलं मं तुलायनमं ॥ धनं न्यासं निमूद्रा कन ॥ गिरि सत्वा दलं रित्वा न स मर्तु हाय
॥ याग्यामं तुलायनमं कर्तनं ॥ कुं डीं व कुं डीं यी जय नमं शं कुं डीं व कुं डीं सनायनमं शं कुं डीं रुद्रं वा
यकं मं तुलायनमं शं ॥ कुं डीं वीं वीं दूि मं तुलायनमं कलाया फलनं नमं शं मं विसं ॥ कुं डीं

ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥
नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ ध्यानयाय ॥ वक्रादियवकयूग
प्रतिदिक्तीर्णं मूलेषु हेतुनिवद्यलया नलम् । तस्यार्द्धलदलगतकदविद्रुमारु
यथास्ति तारुगवमीयनमदिनास्या ॥ सिंह रुक्तालकयिम्बु उन्नतगार्ध्यागम्य
वीमकवमानवर्धकिवर्क । गूलाङ्गनाय बहुमङ्गवयागवार्ध्यागम्य स्वदाङ्गनालक
निवास्ति तया लियद्या ॥ ककायाव ॥ दवगिरुकि सुल्लरु वनिवावसुमन्तिनाया

वर्णाङ्गयिद्यामि तावर्क सुस्ति नारुव ॥ ॐ हागक २ ॐ ह तिष्ठ २ ॐ ह सुस्ति नारुव ॥ आ
गद्यतिष्ठ ॥ ॐ ह्रीं नमो भगवते वासुदेवाय नमः ॥ धनयानिम्बुद्राकन ॥ मूलमन्त्रल याय मूर्ध्यागवमनीय मधु
यक्क यूनवावनीय स्नान वसु मारुबल वन्दन नकवन्दन सिद्धव मूर्धना यथा धूप
दीप नेवद्य तथाल २ ॥ गान्धूलसमर्थलमधु ॥ नमस्कृतयाय मारुबल नयनिवावयु
जायाय ॥ विश्वगया उर्वहा मरुद्वीया दूका पूजयामि तथ्यामि नमः ॥ सुद्धि ॥ उर्वहा
मरुद्वीया विश्वगया प्रीया दूका पूजयामि तथ्यामि नमः ॥ स्ति ति ॥ उर्वहा मरुद्वीया ग

नयथागकि जययाय ॥ जयसमर्थेन ॥ युक्तियुक्तगणहर्त्तृ गृहाणसत्कर्तृजयं ।
सिद्धिर्देवभूममातस्त्वत्पुसादास्त्वयिस्त्रित ॥ धनाकाप्रयाय ॥ वन्दसदासकलकोलिक
सान्धर्तं कथयन्त्रकवकयालकदम्बमालं । खट्वाङ्गखड्गववरुटककायहर्त्तुं दायस्त्रि
तं प्रियुवनम्यवन्नराया ॥ श्रीगणसनवदूकनाथवृत्तिप्रसिद्धस्त्रिदशसुवात्रिजनकान
नधूमकडुं । गोत्रीसूतं । गणकिसमूहलितानादधानद्वयायास्त्रिकवसनभगिनिवारुनात
॥ सिद्धनसादवदमूर्च्छितवककूहं निजिद्यनाघनयथाधनदहलक्षी ॥ विजयलक्ष्मी ॥

वदवमादककायहर्त्तुं वायाद्वयंगलयनिःसकलार्थदाता ॥ वृद्धज्ञानीक्रियासासू
वदवमनिमासाप्रियाममलारुखा । सालोत्रीसावदूग्नारुगवतिवसूधामारुकावभूमपु
सावकासावविष्णुर्गगनमिताहेवदीकृष्टयाला । सानकानकदूयाविविधगुणयू
तायागिनीत्वंनिमामि ॥ ॥ यासान्ककानिकुरुलाकिनरासुबूयां । सामाकवद्विप्रियथा
दवमध्यसंस्कृं । विद्यतविरुविषयाकविलीनरावां । सृष्टिस्त्रितियलयकानलतत्त्वबूयां ॥ क
नालिकासकलरावविरावरिनी । मानन्दनन्दिनसदायवमार्थलीनी । नाडीकलाकलित

विग्रहमन्त्रयुगां सकादशाकवगमाखलुकिदवर्णु॥ विद्यागताकववनाकलकमवर्णु
लाकलम्यठवनाकलसंघसिद्धी। एकाक्षनेकगतिवक्रवत्रययुगां सत्सप्तसिद्धिरुवृक्ष
ववयुजिताया॥ कालीकलाकलितकालकलामिवाहा, धीवक्रवक्रनिलयानवदरुदहि
नी। यूगुगलगाकलितकालकलानुयुगा, विज्ञानसिद्धिवववक्रिकलप्रसिद्धा॥ अलक्षय
ववयदायवमयववृणा, वक्रक्रमगदितमन्त्रमहाथर्विदा। सत्सप्तसिद्धिनिवगाकवसिद्धि
दात्री, स्वाहावराविनयवप्रियमामिकाली॥ ४०॥ निकालीयचक्र॥ ४॥ त्वमसियवमका

लीसिद्धिलक्ष्मीस्त्वमव, त्वमसियव मवर्णुउयववृणात्वमव। त्वमसियवमनाकावाजवाज
वव्रीत्, सकलनिहितमयूनसर्वसिद्धिप्रदाउ॥ अक्षनादिनिर्हंकाली॥ काठिमूर्या॥ तः
प्रसी। त्रैलोक्यवक्रगगतां, मङ्गलप्रियमाम्यहं॥ अयवाधसहस्रराजन, धतिर्तरीमरुवा
र्णुवादन। अगतिनिवगागतीनिव, कययाकवलमात्मसात्कृन्॥ जदम्बममावलम्बनं, त
वयादात्मजभवकवली। नहिनायदनायमकवा, रुवनवाटकथानकस्तिनिश॥ अन्यय
नवर्णनासि, त्वमवगवर्णमम। तस्मात्कावृण्यरावन, वक्रवक्रयवमव्यवि॥ धनस्तय

यादावययमूद्रानममस्तु नयाय ॥ नय्यगयाय ॥ धनावीनभागिनीयूजा ॥ नहसाधन

॥

३१

१० नमो नाट्य वाय ॥ मल्लावा ॥ वृय ॥ रुव रुय रुअ नि अम वति नागिनि
जगजनया विनि शिखु वन ता विनि ॥ मनसूख दाये नि विद्यु मण मा विनि
जयजय दाये जयवल का विनि ॥ सूव गण नदि निद्रा विनि कान्दि वि
मृगया नि वा विनि समव विनि विनि ॥ नृयज गजा नि मा नि वा विनि वरुण न
वाग मल्लाव ज नि गा ल वृय क ग नि ॥ १ ॥ २ ॥ ३ ॥ सखा रुयु ग दा वा ॥ म
व म सा व न ॥ या य व रु ग त य ग स्ना रु वि नि ग मा म्ना रु ॥ रु अ म्ना व न म

संस्कृत
मन्त्र

1.720

I

राज. ॐ हं मतिहमना सवकाहा अडा ॥ अता हना सक्ता सवहमदू वा अ
विना कवजुजाव. ताहदू की जकवजुजाह ॥ ॥ मालव ॥ ॥ ॥ यलवहम
दू वाजकाज विवाथ. ताहदू मही तलकवह विहाथ ॥ १ ॥ ह्यात १ ह
मना सराणा लारु वसू ॥ यणसाधू साधू ॥ ॥

रंजवसहिगायेनमः॥ॐॐचलुत्रयाचामलुडाकुरंजवसहिगायेनमः॥ॐॐप्रमिवलुका
 मरुलश्रीॐकुरंजवसहिगायेनमः॥॥जयश्रीधियेनमः॥ॐवर्ममङ्गलाकालीरुद्रकला
 कयालिनीदूर्गाशिवाक्रमाधारीस्वारास्वधालश्रीसर्वस्वनीसावित्री॥चलुकायेनमः
 ॥ॐवर्ममङ्गलाकालिका॥वक्राद्याद्यष्टमाष्टकस्थानमः॥सर्वस्वत्येनमः॥ॐवर्म
 मूना॥असिगाद्याद्यष्टकस्थानमः॥सर्वस्वत्येनमः॥ॐवर्मजगद्गमः॥अहिंहाकृत्वस्थानमः॥
 खमदिदद्यायुधस्थानमः॥रुद्रकक्रुयालायनमः॥ॐवर्मचक्रयादचक्रदक्षमहर्दक्षविष्णु
 नकक॥अग्निजिह्वरुमन्त्रयमरुत॥ॐवर्मलकसरुमायिपुकिनीस्थानमः॥वालुदवगायेनमः

पूर्व शृङ्खलवन्ता। सक सा नत्र स्थानम॥ पूर्व सक यागात् सक स्वर्ग सक गीर्था॥ १॥ अदिन दह्या
 नमः॥ गमादिन दीस्थानमः॥ आदित्यादिन वरुणस्थानमः॥ इन्द्रादि दह्यादि द्वा लस्थानमः॥ प्रमि
 यदादि विधिस्थानमः॥ अश्विन्यादिन क्रतुस्थानमः॥ विष्णुकादिया॥ १॥ अस्थानमः॥ भयादिनाः
 छिस्थानमः॥ ऊयावरु॥ १॥ नाद्यश्च॥ १॥ मसानस्थानमः॥ वायुका॥ १॥ पुयनमः॥ छित्यका॥ १॥ पुय
 नमः॥ वक्र॥ १॥ नमः॥ विष्णुवनमः॥ वदूकायनमः॥ ग॥ १॥ यगयनमः॥ क्रतुया॥ १॥ लायनमः॥ याः
 निनीस्थानमः॥ सर्वस्थादवस्थानमः॥ मूलन॥ १॥ गिया॥ १॥ अलि॥ १॥ वैद्री॥ १॥ ह्रीं॥ १॥ ह्रीं॥ १॥ नाद्य
 द॥ १॥ ह्रीं॥ १॥ वलि॥ १॥ नियम॥ १॥ दि॥ १॥ ह्रीं॥ १॥ सदा॥ १॥ नक्र॥ १॥ रत्न॥ १॥ मां॥ १॥ स॥ १॥ मृ॥ १॥ रु॥ १॥ न॥ स्वा॥ १॥ ॥ १॥ ॥ ह्रीं॥ १॥

को ह्रीं नैं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं सर्वं ह्रीं यमदिनिमदिनमदिनि जगत्त्रिंशो नैं यत्र
 यो ० ॥ नाजनां ह्रीं निमरुव निविना निनिकालकलान्क काजिलि सर्वदवस्त्रपिलिवे
 कवि ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं नाना यलिविक्क वक्क ह्रीं नृया तीत ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं नैं नमः ॥
 हृत्पय ह्रीं विमरु ह्रीं नैदवी धामदिगन्धलिय यादयाग ॥ यश्च वलि ॥ वाक वलि ॥ नैं ह्रीं
 ह्रीं दक्क यस्त्र विना सिन्धो मरुधा नाथे भागिनी कठिघनिवगाथे ह्रीं ह्रीं काली ह्रीं नैरुहा
 निकथे सा म्नाथे सयनिवानाथे ॥ मां गृह्णन्ति गृह्णन्ति ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
 ह्रीं यश्च ना ह्रीं मरुगा ह्रीं वगा ला ह्रीं गृह्णन्ति लका ॥ उकिन्त्य ह्रीं मरुवा ला ह्रीं गृह्णन्ति क

गयुगना ॥ यो ० का १ ह्रीं गज ह्रीं वग ह्रीं ना ह्रीं मरुजा स्रथा ॥ या ॥ जामरुजा ह्रीं वजलज ह्रीं वि
 ह्रीं विग ॥ नाना नृपधनावा न्धयवा न्धवलवरुना ॥ नाना दहनिवा ह्रीं न्ध्या गृस्मिं ह्रीं वक्क म
 स्मिगा ह्रीं समया ॥ येन यवा न्धयवा न्धवलिका क्रि ॥ १ ॥ ह्रीं यन्तु गृह्णन्ति ह्रीं धूयदी यादि
 ह्रीं लु ॥ ह्रीं ददा ह्रीं म कामान् वकिगार्थ यदहिम ॥ ह्रीं ह्रीं नैं वलि गृह्णन्ति ह्रीं ह्रीं ह्रीं ह्रीं
 ॥ मूलम ॥ रुन ॥ गजार्थ कर्मा ॥ गु ॥ कर्मा ॥ त्यादिना जय समर्थ सर्व कर्मा ॥ यश्च म ॥ विव्वा
 नमस्त्र यान् ॥ दवी घसा द ॥ कि भावी व ॥ ह्रीं दत्ता रुजन कर्मा ॥ ॥ ह्रीं कलस स्रघन ॥

[illegible]

धुयेनमः॥ अं यः अग्निवलि कासी नरे नव सहिगमहा ल श्वेनमः॥ उर्ववलि ॥
 षट्का॥ ॐ अकि न्येनमः॥ वां वाकि न्येनमः॥ लां लाकि न्येनमः॥ कां काकि न्येनमः॥ यां
 साकि न्येनमः॥ हां हाकि न्येनमः॥ गथा वलि ॥ गिका॥ घूं घूर्ल गिनिपी भयन
 मः॥ जां जाल न्येनमः॥ उं उा श्यानपी भयनमः॥ कां काम न्येनमः॥
 उर्ववलि ॥ म॥ ॐ जय ह्येनमः॥ उर्व म झला काली रुद्रकाली कयालिनी दूर्गा
 शिवा क्रमा अगी खाहा स्वधा ॥ मूलना अलिगुर्यदत्ता स्वर्ग धूर्ग यग्न मूलन
 ॐ महिषमर्दिनि स्वाहानमः॥ म॥ ॐ नमो रुगवनिथा ॥ ॐ धनिमहावनययाक

